स्थापित करने का प्रस्ताव रखा तब मैंने अव्यक्त बापदादा से पूछा था कि हमारे सेवाकेन्द्र से, संन्यासिनी बनी हुई सुशीला बहन के यहाँ ट्रस्ट का कारोबार कैसे हो सकता है। तब अव्यक्त बापदादा ने संदेश में यही कहा था कि द्वापर युग के बाद जो विभिन्न धर्म प्रस्थापित होंगे उनके उद्‌भव के निमित्त आप सब बच्चे ही बनेंगे। आपके द्वारा ही उनको जन्म मिलेगा और फिर वे अपना कारोबार अलग से करेंगे। इस प्रकार से धर्मों की भी स्थापना होती रही फिर धर्मों में भी विभाजन होता रहा जैसे इस्लाम धर्म के शिया और सुन्नी दो पंथ बन गये। कई धर्मों जैसे मुसलमान धर्म ने, अन्य धर्म के लोगों को आकर्षित करने के लिए कई नये प्रकार के कर्मकाण्ड बनाये। पुरुष प्रधान संस्कृति को बढ़ावा मिले इसलिए एक पुरुष को चार स्त्रियों के साथ शादी की छूट दी। भारत में निज़ाम राज्य के मुसलमान राजा ने भी अपने राज्य में मुसलमानों की संख्या बढ़े इसलिए पाँच स्त्रियों के साथ विवाह की स्वीकृति दी।

कई धर्मों का लक्ष्य रहा, अन्य धर्म के लोगों का धर्मान्तर कराकर अपने धर्म में लाना। मिसाल के तौर पर सन् 1971 में विदेश सेवा के दौरान हम शिकागो में ईसाई धर्म की एक संस्था में गये। उन्होंने एक रिपोर्ट बनाई थी कि अन्य धर्म के लोगों का धर्मान्तर अपने धर्म में उन्होंने कितना किया। उन्होंने हमसे भी पूछा कि आपकी संस्था ने कितने लोगों को कन्वर्ट किया है। तब हमने कहा कि परमपिता द्वारा स्थापित इस विश्व विद्यालय में एक धर्म से दूसरे में कन्वर्ट करने का हम प्रयत्न नहीं करते बल्कि हम चाहते हैं कि बुरे इंसान का अच्छे इन्सान में परिवर्तन हो। तब उन्होंने यही सवाल पूछा कि इससे आपको क्या फायदा, आपकी संस्था कैसे बढ़ेगी?

इसी प्रकार, जहाँ-जहाँ लोग गए, वहाँ उन्होंने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषाएँ निर्मित की। भारत में दो राष्ट्र भाषायें हैं। वर्तमान समय भारत में 1,618 भाषायें, 6400 जातियाँ हैं। कहाँ सतयुग का एक धर्म, एक भाषा और कहाँ आज भारत में इतनी भाषायें, इतने धर्म और इतनी जातियाँ बन गई हैं।

हमने इस लेख में सतयुग के एक धर्म, एक भाषा और एक परिवार का विभाजन होते-होते वैश्विक स्तर पर कितना विस्तार हुआ, उसे सार में लिखने का प्रयत्न किया है। इतने धर्म, राज्य, परिवार, भाषा में विभाजित इस विश्व को एक राज्य, एक भाषा आदि के रूप में कैसे परमात्मा परिवर्तन करते हैं, इस बात को हम समझें तब हमें परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य की सच्ची महिमा समझ में आती है। हम परमात्मा के ऐसे दिव्य और श्रेष्ठ कर्त्तव्य को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करें तभी सारा विश्व एक ही पिता परमात्मा को अपना पिता मानने को तैयार होगा। इस कार्य के लिए जो थोड़ा-सा समय हमें मिला है, उसी में इसे करना है इसलिए शिव बाबा ने हम बच्चों को उड़ती कला के पुरुषार्थ द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग को प्रसिद्ध करना सिखाया है। शिव बाबा की इस उम्मीद को उम्मीद के सितारे बनकर पूरा करना हम ईश्वरीय संतानों का फर्ज है। ❖

भगाइये क्रोध... पृष्ठ 1 का शेष

जो व्यक्ति दूसरों को कुछ दान करता है, उसे 'दानी' कहा जाता है और जो व्यक्ति समझदार नहीं होता, उसे 'नादान' कहा जाता है। परंतु परमपिता परमात्मा कहते हैं कि जो व्यक्ति क्रोध का दान नहीं करता, वही 'नादान' (दान न करने वाला) है, इसलिए उसका कल्याण भी नहीं होता। जो मनुष्य चाहता है कि मेरा कल्याण हो, उसे अब परमात्मा को क्रोध का दान दे देना चाहिए। ❖